International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor- 5.414, Volume 4, Issue 7, July 2017
Website- www.aarf.asia, **Email** : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

सलाम - द लत जीवन का आईना

डॉ. सजीव. के, अ सस्टन्ट प्रोफसर, एन.एस.एस. कॉलेज, ओ प्पालम।

भारतीय द लत-साहित्य-जगत में एक महान शक्ति और ऊर्जा भरनेवाला नाम है ओमप्रकाश वाल्मी क। जिनके नाम के साथ अपनी पहचान भी जुडी हुई है। उनका सारा जीवन पदद लत समाज को जाग्रत करने तथा चेतना एवं क्रांति की प्रकाश में ही अ र्पत हो गया। उनका जन्म चूहडा जाति के परिवार में हुआ था। अपनी आत्मकथा 'जूठन में उन्होंने द लत समाज के अनेक संदर्भों को अपने जीवन के माध्यम से सामने रखने का प्रयास कया है। इनका संपूर्ण लेखन एवं चंतन वर्चस्वशाली सभ्यता एवं संस्कृति के हज़ारों साल के इतिहास, संस्कृति, धर्म एवं साहित्य का वकल्प प्रस्तुत करता है। इनकी रचना-दृष्टि झूठ एवं पाखंड पर गहरी चोट करती है, तथा ता र्कक ढंग से सच को साहित्य एवं समाज के समझ उजागर करती है। ओमप्रकाश वाल्मी क के यहाँ साहित्य की शुरुआत घनीभूत वेदना से होती है। यहाँ वर्ण-व्यवस्था से उपजा संत्रास है, जिसका भुक्तभोगी स्वयं लेखक ही है। समकालीन संदर्भों में जाति-पाँति, ऊँच-नीच, छुआछूत, लंगभेद, भाग्य-भगवान, कर्मकांड, पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक, पाखंडवाद, पुरोहितवाद, अंध वश्वास तथा अन्य ब्राह्मणवादी वर्चस्व

का वरोध ओमप्रकाश वाल्मी क के लेखन में मलता है। द लत चेतना का यही मूल आधार और प्रमंुख स्वर है जो यथास्थितिवाद को नकारकर मानदंडों और सौन्दर्यबोध में रूपांतरित होता है।

ओमप्रकाश वाल्मी क का जन्म 30 जून, 1950 को उत्तर प्रदेश के मुज़फर नगर के बरला गाँव में हुआ था। उनकी शक्षा अपने गाँव और देहरादून के स्कूल-कांलेजों में हुई। उनका बचपन सामाजिक और आ र्थक कठिनाईयों में बीता। प्रारं भक जीवन में उन्हें जो सामाजिक, आ र्थक और मान सक कष्ट झेलने पडे, उसकी प्रखर अ भव्यक्ति उनके साहित्य में हुई है। अपनी आत्मकथा 'जूठन' इसका जीवंत दस्तावेज है। वे कुछ वर्षों तक महाराष्ट्र में रहे। वहाँ के अम्बेडकर साहित्य और मराठी द लत लेखकों के संपर्क में आये और उनकी रचना दृष्टि में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ। असल में उनकी द लत दृष्टि का निर्माण और वकास यहीं हुआ। बाद में वे देहरादून आये और आर्डनेंस फैक्टरी में एक अ धकारी के रूप में काम करते हुए वहीं से रिटायर हो गये। बीमारी के कारण 17 नवंबर 2013 को केवल 63 वर्ष की आयु में आप इस दुनिया से चल बसे।

ओमप्रकाश वाल्मी क ने क वता, कहानी और आत्मकथा के माध्यम से द लत साहित्य को समृद्ध कया। ओमप्रकाश वाल्मी क डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर से प्रभा वत थे इसी कारण वे जीवन भर वे बाबा साहेब के वचारों को अपनाकर सवर्ण समाज से संघर्ष करते रहे। हिन्दू समाज की वकृत मान सकता का वर्णन उनकी क वता, कहानी, आत्मकथा तथा अपने वैचारिक लेखन में दिखाई देता है। उनकी कहानियों में द लत समाज की भोगी हुई पीडा का यथार्थ वर्णन मलता है। द लत समाज में फैली अंधश्रद्धा, अज्ञानता, पुराने

रीतिरिवाज़ों के नाम पर नयी पीढ़ी का संघर्ष, उनकी आ र्थक, राजनीतिक स्थिति, आदि का वस्तार से उनकी कहानियों में वर्णन मलता है। ओमप्रकाश वाल्मी क के व्यापक अनुभवों से उनकी कहानियों में चत्रित पात्र एवं घटनाओं में जीवन्तता का बोध होता है। उनकी कहानियों में अमूल्य परिवर्तन की तीव्र आकांक्षा वद्यमान है।

ओमप्रकाश वाल्मी क के 'सलाम', 'घुसपैठिये', 'छतरी' कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ द लत समाज के यथार्थ का चंतन करती है। 'सलाम' कहानी संग्रह द लतों के जीवन की त्रासदी का महा आख्यान है। चैदह कहानियों को संग्रहीत इस संग्रह की प्रथम और सबसे प्र सद्ध कहानी है 'सलाम'। 'सलाम' कहानी के माध्यम से, वाल्मी क ने समाज की अनेक बुरी परंपरा एवं रिवाज़ों को समाप्त करने का सन्देश दिया है। इसमें उन्होंने कमल बनकर अपने वचार प्रस्तुत करते हुए समाज में एकता लाने का प्रयत्न कया है। उदाहरण के लए एक दिन कमल हरीश को अपने घर ले गया और साथ ही खाने के लए बैठ गए। उसकी जाति का पता चलने पर कमल की माँ कहने लगी – "पता नहीं कहाँ-कहाँ से इन कंजडों को पकडकर घर ले आता है। खबरदार जो आगे से कसी हरामी को दुबारा यहाँ लाया .....।"[1]

यह सुनकर हरीश हताश हो गया। कमाल अपना था, पर माँ के इस व्यवहार से वह पराया लगने लगा था। घर धोना, गंगाजल छिडककर शुद्ध करना यह सब देखकर कमल का बाल-मन मुरझा गया। वह चुपचाप अपने कमरे में जाकर लेट गया। माँ मनाने आयी, क्यों क वह दिन भर कुछ नहीं खाया था। इसे मनाने में माँ के सारे दाँव-पेंच हार गये थे। कमल के नज़दीक आकर माँ कहती है – "बेटे इनके संस्कार गलत हैं, ये छोटे लोग है। इनके

साथ बैठने से बुरे वचार मन में पैदा होते है।“[2] तब पारंपरिक नियमों का वरोध करते हुए, कमल अपनी माँ से कहता है – “तुम कभी उनके घर गयी हो? उनसे मली हो? फर कैसे जानती हो वे बुरे लोग है।”[3]

बिना सोचे समझे कसी को बुरा कहना, कोई दोष देखना तो गलत बात है। यह सत्य वचार उस बच्चे को लग रहा है। परंतु अपने आप को ब्राह्मणी समझनेवाली उसकी माँ के मस्तिष्क में अन्धश्रद्धा का भूसा भरा है। कमल उसमें आग लगाकर हीन परंपरा का नाश करना चाहता है। कमल का काम इतनी आसानी से नहीं बन पाता। दोस्त के साथ रहना है तो माँ की एक शर्त के सामने झुकना ही पडता है। वह शर्त है - ‘‘हरीश घर पर आयेगा। ले कन उसके खाने-पीने के बर्तन अलग रखे जायेंगे।’’

इस कहानी में नायक हरीश, भंगी समाज से संबं धत है। पूरी कहानी का ताना-बाना हरीश के ववाह के चारो तरफ बुना गया है। हरीश का अच्छा मत्र कमल उपाध्याय है, जो उसकी बारात में शा मल नहीं होता, बल्कि उसके ववाह की तैयारियों में भी घर-परिवार के सदस्य की तरह लगा रहता है। हरीश की बारात देहरादून से मुसफर नगर के पास के एक गाँव में पहूँचती है। अगले दिन सुबह कमल को चाय की तालब लगती है और वह ढूँढते हुए गाँव की चाय की दुकान पर पहूँचता है। दूकानवाला यह जानकर क यह देहरादून से जुम्मन चूहडे के यहाँ बारात में आया है, तो चूहडा (भंगी) है - होगा। कमल को चाय देने से मना कर देता है। यहाँ जिस अपमानजनक स्थिति से गुज़रना पड़ता है, उसे चायवाले और कमल के संवादों के माध्यम से भली-भाँती समझ सकते है – “यहाँ चूहडे चमारों को मेरी दुकान पर चाय ना मलती .... कहीं और जाके पयो।”[4]

तो कमल उससे उसकी जाति पूछ लेता है। इस पर चायवाले कहते हैं – "मेरी जात से तुझे क्या लेण-देणा। इब चूहडे चमार भी जात पूछने लगे .... कलजुग आया है, कलजुग।"[5]

"हाँ! कलजुग आ गया है, सर्फ तुम्हारे लए, तुम अपनी जात नहीं बताना चाहते हो, तो सुनो-मेरा नाम कमल उपाध्याय है। उपाध्याय का मतलब तो जानते ही होंगे, या समझाऊँ .... उपाध्याय यानी ब्राह्मण।"[6] कमल ने आँखें तरेरकर कहा।

"चूहडों की बारात में बामन?'' चायवाला कर्कशता के साथ हँसा। ''सहर में चूतिया बजाना .... मैं तो आदमी देखते ही पछाण (पहचान) लूँ ..... क कस जात का है।"[7]

जब ये संवाद चल रहा होता है, तभी वहाँ पर बल्लू-रांघड (राजपूत) का रामपाल भी आ जाता है और कमल को गाली-गलौज करने लगता है – "ओ! सहरी जनखे हम तेरे भाई है?'' साले जीवन संथाल के बोल गाँड में डाल के उलट दूँगा। जाके जुमन चूहडे से रिश्ता बणा। इतनी जोरदार लौं डया लेके जा रहे शहरवाले, जुम्मन के तो संग लकड आये है। अरे लौं डया को कसी गाँव में ब्याह देता, तो म्हारे जैसें का भी कुछ भला हो जाता।" एक तीखी हँसी का फव्वार छूटा। आस-पास खडे लोगों ने उसकी हँसी में अपनी हँसी मला दी। कमल को लजा जैसे अपमान का घना बियाबान जंगल उग गया है। उसका रोम-रोम काँपने लगा।"[8]

प्रस्तुत कहानी में चत्रित एक अलग समस्या है 'सलाम' प्रथा की समस्या। द लत दूल्हा (भंगी) सवं र्णयों के मुहल्ले में जाकर 'सलाम' करने की पद्धति उत्तर भारत में थी। उसके बदले में उसे कुछ उपहार दिया जाता था। वशेषकर दुल्हन की माँ जिन सव र्णयों के घर के साफ-सफाई करती है, उनके आँगन तो जाना ही है। ऐसी कुप्रथा देहातों में चलती थी।

अब पढ़े- लखे द लतों ने इसका वरोध करके रोक दिया है। हरीश का परिवार शहर में पला-बढ़ा था। इस लए इस पद्धति का असर उनपर नहीं था। जब वे देहात से दुल्हन लेने के लए आये थे तो इन सारी रस्मों को निभाने के लए दुल्हन के पता जुम्मन दूल्हेवालों से प्रार्थना करता है। यह समस्या दूल्हे के सामने रखते हुए बताता है – "सलाम रस्म को निभाया नहीं गया तो इनका गाँव में रहना मुश्किल हो जायेगा।" लाख कहने पर भी दुल्हा हरीश और उसके पताजी उस प्रथा का खुलकर वरोध करते हैं। हरीश कहता है - ''आप चाहे तो समझे ..... मैं इस रिवाज को आत्म वश्वास तोडने की साजिश मानता हूँ। यह सलाम की रस्म बन्दी होनी चाहिए।"[9]

कहानीकार ने जुम्मन के परिवार का इस तरह परिचय दिया है – "हरीश के ससुर जुम्मन ऋ षकेश में सरकारी कर्मचारी थे। परिवार गाँव में रहता था। पारंपरिक जीवन था। गाँव के कई परिवार में साफ-सफाई का काम हरीश की सास करती थी। जुम्मन की बड़ी लड़की बाप के साथ ऋ षकेश में ही रहती थी, सरकारी मकान में। आस-पडोस की देखा-देखी जुम्मन ने उसे भी स्कूल में भेज दिया। देखते-देखते उसने हाईस्कूल की परीक्षा पास कर ली थी। साथ ही उसमें सुघडता भी आ गयी थी। अच्छा परिवेश पाकर उसमें बदलाव आ गया था। गाँव भर की लड कयों से अलग दिखाई पड़ती थी। वैसे इस गाँव की वह पहली लडकी थी जिसने हाईस्कूल पास कया था।"[10]

इतनी तक होते तो भी जुम्मन 'सलाम' पद्धति का वरोध करने के बजाय रोते-रोते बायतियों के सम्मुख गड गडाते हुए सलाम करने की प्रेरणा देते हैं। असल में कहानीकार सर्फ वषय की ओर संकेत करते हुए पाठकों को इन अमानवीय परंपरा का खंडन करने के

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

लए प्रेरित करते हैं। यहाँ पर लेखक का इशारा, द लतों में भन्नता की ओर भी दिखायी देता है। लेखक यही दर्शाना चाहते हैं क हम एक रहेंगे तो मुश्किल से मुश्किल काम भी आसानी से कर सकते हैं। साथ ही सदियों पुरानी कुपरंपरा को तोडकर नये नियमों को बना सकते हैं जो सभी जाति, धर्म, तथा समाज के हित में हो।

अन्ततः कहानीकार ने धा र्मक क रता की समस्या को दर्शाने का प्रयत्न कया है। हरीश और कमल नीम के पेड के नीचे चारपाई पर बैठे हैं। जल्दी-जल्दी बारात को खाना खलाया गया क्यों क सव र्णयों का डर था कहीं आकर हलचल न मचायें। सामने दीवार की ओर मुँह करके एक दस-बारह का लड़का खड़ा था। उसके चेहरे पर गुस्से का भाव था। उसे ढूँढते हुए आनेवाला एक बूढा रोटी खलाना चाहता है तो लडका कहता हैं – "मुसलमान के हाथ की बणी रोटी मैं नी खाता।[11] कतना समझाने पर भी वह लडका नहीं मानता। भ ी के पास ले जाकर रसोइया से मलाकर कहता है देख यह हिन्दू है। कहने समझाने प रवह चल्ला- चल्लाकर कहता है। "नहीं-नहीं, मैं मुसलमान के हाथ की बणी रोटी नहीं खाऊँगा ... नहीं खाऊँगा ...।[12] इस दृश्य को देखकर बच्चे की बातें सुनकर कमल और हरीश ने गहरी साँसें लीं। यहाँ पर कहानी को वराम कया गया है।

कहानी तो अपने जगह समाप्त हुई है परंतु नये वचारों को जन्म देकर, पाठकों के मन में चंतनशील वचार छोडकर, समाज के सामने जाति-धर्म के मुद्दे को हाल करने का बहुत बड़ा प्रश्न छोड जाती है। भारतीय समाज में जो चल रहा है उसे कहानी के माध्यम से समस्त वश्व को दर्शाने का प्रयत्न रहा है। जो निन्दनीय वषय है, जहाँ अन्याय हो रहा है। समाज का एक तबका अपमानजनक जीवन जी रहा है। साहित्य की सहायता से कहानीकार

ने बु द्धजी वयों तक यह संदेश पहूँचाने का काम कया है। मानव, मानवीयता का हनन कस प्रकार कर रहे हैं, छोटे-बडे, छूत-अछूत अमीर-गरीब, श्रेष्ठ-कनिष्ठ के भाव मन में लाकर कस तरह लोग समाज की एकता को तोड रहे हैं आदि का चत्रण वाल्मीकी जी अपनी कहानियों में कया है। ओमप्रकाश वाल्मी क ने समाज के अनेक ज्वलंत समस्याओं को अपनी कथाओं में परोकर पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कया है। इनकी कहानियाँ पाठकों के मन को आनंद ही नहीं देती बल्कि मानव के मन में मानवीयता जगाकर-जग के साथ कैसा बर्ताव करना चाहिए का सबक सखाती हैं।

संक्षेप में कह सकते हैं क ‘सलाम’ कहानी रचनात्मक पराकाष्ठा और द लत जागरण के भावबोध से सराबोर है, इसमें परिवर्तन की ललक है। ऊँची जातियों द्वारा द लतों पर थोपी गयी ‘सलाम’ प्रथा जो दासत्व और वं चत होने की पीडा को और गहराकर द लतों की सामाजिक कुंठा को दृढ़ करती है। ले कन कहानी के नायक हरीश द्वारा अपने ववाह के पश्चात् पत्नी संग, गाँव के दबंगों के दरवाजे पर सलाम ठोकने का इनकार सामन्तवादी रीति-रिवाज़ों के वरुद्ध प्रबल वरोध का रूपक बन जाता है। हरीश जैसे श क्षत द लत युवक का यह साहस, द लत समाज के सम्मान की ओर बढ़ाया गया एक सार्थक कदम है तथा साहित्यिक दृष्टि से हिन्दी कथा साहित्य में सशक्त द लत नायक के उभार के संकेत हंै। ओमप्रकाश वाल्मी क की कहानियों की एक वशेषता यह भी है क, इसके पात्र नकारात्मक परिस्थितियों के बावजूद बदलाव की उम्मीद करते है। अतः सामाजिक चेतना और द लत पुनर्जागरण की कसौटी पर, ओमप्रकाश वाल्मी क की कहानियाँ खरी उतरती हैं। सभी दृष्टि से ‘सलाम’ कहानी द लत जीवन का आईना है।

© **Associated Asia Research Foundation (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

संदर्भ ग्रंथ

1. सलाम, ओमप्रकाश वाल्मी क, राधाकृष्ण प्रकाशन, चैथा संस्करण, 2016।

2. वही, पृ. 15

3. वही, पृ. 15

4. वही, पृ. 12

5. वही, पृ. 12

6. वही, पृ. 12

7. वही, पृ. 12

8. वही, पृ. 12-13

9. वही, पृ. 17

10. वही, पृ. 16

11. वही, पृ. 18

12. वही, पृ. 19

* * *